राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा जबलपुर वन मंडल में राष्ट्रीय लाख कीट दिवस का आयोजन दिनांक 16/05/2025

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्–राष्ट्रीय कृषि उच्चतर प्रसंस्करण संस्थान, रांची के निर्देशन में लाभकारी कीट सप्ताह एवं राष्ट्रीय लाख कीट दिवस के अवसर पर राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर एवं जबलपुर वन मंडल के द्वारा संयुक्त रुप से वन परिक्षेत्र सिहोरा के अंतर्गत ग्राम सिलुआ में दिनांक 16/05/2025 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया है जिसमें कुल 25 कृषको एवं वन समिति सदस्यो ने भाग लिया। लाख एक प्राकृतिक राल है जो कैरिया लैक्का नामक लाख कीट प्रजातियो के शरीर में फैली सूक्ष्म ग्रन्थियो द्वारा स्त्रावित होता है जो वातावरण के सम्पर्क में आकर सूख जाता है जिसे लाख कहते है। देश में रंगीनी एवं कुसुमी लाख कीट के माध्यम से लाख उत्पादित किया जा रहा है। रंगीनी लाख की खेती मुख्य रुप से पलाश एवं बेर के वृक्षो पर की जाती है। जबकि कुसमी लाख की खेती कुसुम, बेर एवं सेमियालाता के पौधो पर की जाती है।

प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान कृषको को लाख उत्पादन के उन्नत तकनीक, लाख कीट जीवन चक्र, फसल चक्र, लाख पोषक वृक्षों की जानकारी, कीट संचारण, लाख फसल प्रबंधन, फसल कटाई, लाख प्रसंस्करण से सम्बंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गयी। प्रशिक्षण कार्यशाला में बताया गया की उक्त क्षेत्र के अनुसार लाख उत्पादन हेतु पलास, बेर एवं सेमिलता उपयुक्त वृक्ष है, जिनमे औसत आकर के प्रत्येक पलाश के वृक्ष से 5–6 हजार प्रत्येक बेर के वृक्ष से 6–7 हजार एवं प्रति एकड़ सेमिलता का प्लांटेशन करके 5–6 लाख रूपये की आय प्राप्त की जा सकती है जिसके माध्यम से लोगो में लाख उत्पादन के उन्नत तकनीक हेतु जागरूकता उत्पन्न हो रही है। जबलपुर के विभिन्न क्षेत्रो में लाख उत्पादन की अपार सम्भावनाऐं है परन्तु तकनीकि ज्ञान व जागरूकता के अभाव में लाख का उत्पादन बहुत कम हो रहा है जिले के आदिवासी बहुल क्षेत्र में लाख की खेती की सम्भावना है व किसान अपनी परम्परागत खेती के साथ लाख कीट पालन अपनाकर अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं।

उक्त कार्यशाला में सस्थान के वैज्ञानिक डॉ अनिरुद्ध मजूमदार ने बताया कि भारत में लाख उत्पादक क्षेत्रों के अधिकांश जनजातीय परिवार कृषि के सहायक व्यवसाय के रूप में लाख की खेती करते हैं। लाख के उपयोग मुख्य रुप से फार्मास्यूटिकल, परफ्यूम, कास्मेटिक, पेन्ट, वार्निश, प्रिटिंग, इलेक्ट्रानिक, पॉलिश एवं चमडा इंडस्ट्रीज में किया जाता है। लाख की वैश्विक स्तर पर अत्यधिक मांग है लाख के निर्यात के माध्यम से हमारा देश विदेशी मुद्रा भी अर्जित करता है। वर्ष 2019–20 में भारत से 7293.47 टन लाख विभिन्न देशो में निर्यात की गई इसके माध्यम से देश को 405.51 करोड की विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई। भारत विश्व में लाख उत्पादन में अग्रणी स्थान रखता है। जिसमें वर्ष 2019–20 की दृष्टि से लगभग 18944 टन वार्षिक लाख उत्पादन रहा है भारत में लाख की खेती मुख्य रूप से झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, ओडिशा और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों एवं आंध्र प्रदेश के वनवासियों एवं आदिवासी समुदायों द्वारा की जाती है। भा.कृ.अनु.प. रांची की रिपोर्ट, 2020 के अनुसार देश भर में लगभग 10 लाख परिवार लाख का सफलता पूर्वक उत्पादन करते है, जिसमे सर्वाधिक लाख कृषक झारखण्ड (4 लाख) में है एवं मध्य प्रदेश में (75000) परिवार लाख की खेती करते है।

वर्तमान में मध्यप्रदेश का लाख उत्पादन की दृष्टि से देश में तीसरा स्थान है जहॉ पर औसत वार्षिक लाख उत्पादन लगभग 2468 टन है जो देश के कुल उत्पादन का 13.03% है। मध्यप्रदेश में मुख्य रूप से लाख का उत्पादन सिवनी, बालाघाट, मंडला, छिंदवाड़ा, डिंडोरी, नरसिंहपुर, नर्मदापुरम, जबलपुर, अनूपपुर एवं शहडोल के विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है। ये जिले राज्य में उत्पादित लाख का लगभग 80 प्रतिशत योगदान करते हैं। जिसमे 95.34% रंगीनी एवं 4.64% कुसमी लाख का उत्पादन

किया जाता है इन जिलों में लाख कृषको एवं संग्राहको की सामाजिक आर्थिक स्थिति के सर्वेक्षण में किये गए सर्वेक्षण में पाया गया है कि लाख कृषको एवं संग्राहको की कुल वार्षिक आय का 20–30 लाख उत्पादन संग्रहण से प्राप्त होता ।

उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन संस्थान के संचालक श्री प्रदीप वासुदेवा एवं वनमंडलाधिकारी जबलपुर, श्री ऋषि कुमार मिश्रा के मार्गदर्शन में परियोजना अन्वेषक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार (वैज्ञानिक) द्वारा सम्पादन किया गया जिसमें सहायता हेतु बलराम लोधी, भारत सिंह आर्मो एवं जशनदीप सिंह ठाकुर उपस्थित रहे, साथ में अतिथि के रुप में श्री दिलीप पटेल, जनपद पंचायत उपाध्यक्ष सिहोरा, श्री शिवप्रसाद बिरहा, सरपंच सिलुआ ग्राम एवं श्री विनय सिंह राजपूत, वनरक्षक आदि उपस्थित थे।

IV नईदुनिया
जबलपुर, शनिवार, 17 मई, 2025
शहर अपना शहर

हैं अन्नदाता संस्थान की ओर नारमन बोरलाग ईस्टीट्यूट जो
उन्हें दी जाने वाली जरूरी हिदायतों में से एक हुआ करती थी कि यह
(लेखकः वरिष्ठ साहित्यकार हैं)।
ने जोर पकड़ लिया।

लाख उत्पादन की अपार संभावनाएं

जायजा ● तकनीकी ज्ञान व जागरूकता के अभाव में लाख का उत्पादन कम

नईदुनिया प्रतिनिधि, जबलपुर : लाख उत्पादन के लिए पलाश, बेर एवं सेमिलता उपयुक्त वृक्ष हैं, जिनमें औसत आकार के प्रत्येक पलाश के वृक्ष से पांच से छह हजार, प्रत्येक बेर के वृक्ष से छह से सात हजार एवं प्रति एकड़ और सेमिलता का प्लांटिशन करके पांच-छह लाख रुपये की आय प्राप्त की जा सकती है, जिसके माध्यम से लोगों में लाख उत्पादन के उन्नत तकनीक के लिए जागरूकता उत्पन्न हो रही है। जबलपुर के विभिन्न क्षेत्रों में लाख उत्पादन की अपार संभावनाएं है, परंतु तकनीकी ज्ञान व जागरूकता के अभाव में लाख का उत्पादन बहुत कम हो रहा है।

जिले के आदिवासी बहुल क्षेत्र में लाख की खेती की संभावना है व किसान अपनी परम्परागत खेती के साथ लाख कीट पालन अपनाकर अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं। यह बातें लाभकारी कीट सप्ताह एवं राष्ट्रीय लाख कीट दिवस पर राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर एवं जबलपुर वन मंडल ने वन परिक्षेत्र सिहोरा के ग्राम सिलुआ में कार्यशाला के दौरान विशेषज्ञों ने कहीं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् राष्ट्रीय कृषि उच्चतर प्रसंस्करण संस्थान रांची के निर्देशन में हुई कार्यशाला के दौरान कुल 25 कृषकों एवं वन समिति सदस्यों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान कृषकों को लाख उत्पादन के उन्नत तकनीक, लाख कीट जीवन चक्र, फसल चक्र, लाख पोषक वृक्षों की जानकारी, कीट संचारण, लाख फसल प्रबंधन, फसल कटाई, लाख प्रसंस्करण से संबंधित जानकारी प्रदान की गई।

सिहोरा के ग्राम सिलुआ में निरीक्षण करते वनकर्मी। ● सौजन्य संस्थान

पलाश एवं बेर के वृक्षों पर की जाती है रंगीनी लाख की खेती : बताया गया कि लाख एक प्राकृतिक राल है, जो कैरिया लैक्का नामक लाख कीट प्रजातियों के शरीर में फैली सूक्ष्म ग्रंथियों के कारण स्त्रावित होता है, जो वातावरण के संपर्क में आकर सूख जाता है जिसे लाख कहते है।

देश में रंगीनी एवं कुसुमी लाख कीट के माध्यम से लाख उत्पादित किया जा रहा है। रंगीनी लाख की खेती मुख्य रूप से पलाश एवं बेर के वृक्षों पर की जाती है।

कुसुम, बेर एवं सेमियालाता के पौधों पर होती है कुसमी की खेती : कुसमी लाख की खेती कुसुम, बेर एवं सेमियालाता के पौधों पर की जाती है। कार्यशाला का आयोजन संस्थान के संचालक प्रदीप वासुदेवा, ऋषि कुमार मिश्रा, डा. अनिरुद्ध मजूमदार ने किया। बलराम लोधी, भारत सिंह, जशनदीप सिंह ठाकुर उपस्थित रहे अतिथि के रुप में दिलीप पटेल जनपद पंचायत उपाध्यक्ष सिहोरा, शिवप्रसाद बिरहा सरपंच सिलुआ ग्राम,वनरक्षक विनय सिंह राजपूत आदि उपस्थित थे।

सहायक व्यवसाय के रूप में खेती करते हैं जनजातीय परिवार : कार्यशाला में संस्थान के विज्ञानी डा. अनिरुद्ध मजूमदार ने बताया कि भारत में लाख उत्पादक क्षेत्रों के अधिकांश जनजातीय परिवार कृषि के सहायक व्यवसाय के रूप में लाख की खेती करते हैं। लाख का उपयोग मुख्य रूप से फार्मास्यूटिकल, परफ्यूम, कास्मेटिक, पेन्ट, वार्निश, प्रिटिंग, इलेक्ट्रानिक पालिश एवं चमडा इंडस्ट्रीज में किया जाता है। लाख की वैश्विक स्तर पर अत्यधिक मांग है। लाख के निर्यात के माध्यम से हमारा देश विदेशी मुद्रा भी अर्जित करता है। वर्ष 2019-20 में भारत से 7293.47 टन लाख विभिन्न देशों में निर्यात की गई।

संग्रहण से प्राप्त होता कुल वार्षिक आय का 20-30 लाख उत्पादन : लाख की खेती मुख्य रूप से झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, ओडिशा और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों एवं आंध्र प्रदेश के वनवासियों एवं आदिवासी समुदाय करते हैं। मध्य प्रदेश का लाख उत्पादन की दृष्टि से देश में तीसरा स्थान है।

पत्रिका

लाख उत्पादन को मिलेगा बढ़ावा, दो विभागों ने मिलकर की पहल

पत्रिका@जबलपुर. किसानों की आय बढ़ाने और सतत आजीविका को बढ़ावा देने के लिए वन विभाग और एसएफआरई द्वारा लाख उत्पादन को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस योजना के तहत सिहोरा क्षेत्र को मॉडल एरिया के रूप में विकसित किया जा रहा है, जहां वैज्ञानिक तरीके से लाख उत्पादन किया जाएगा। चयनित किसानों को प्रशिक्षित कर उन्हें लाख से जुड़ी सभी गतिविधियों में दक्ष बनाया जा रहा है, ताकि वे अधिक उत्पादन कर बेहतर आमदनी अर्जित कर सकें।

इसके अलावा, विशेषज्ञों द्वारा किसानों को फसल चक्र के साथ लाख पालन को जोड़ने की जानकारी भी दी जा रही है। वन विभाग और एसएफआरई की इस संयुक्त पहल से न केवल पर्यावरणीय संरक्षण को बल मिलेगा, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी। यह मॉडल अन्य क्षेत्रों के किसानों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन सकता है। वन परिक्षेत्र सिहोरा के अंतर्गत ग्राम सिजुआ के 25 किसानों को चिह्नित किया गया है।

तकनीक बताई

वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार ने बताया कि लाख की खेती के रोजगार का एक बडा जरिया बन सकती है। इसकी मांग ज्यादा और उत्पादन कम है। जिसकी वजह वैज्ञानिक तकनीकों की जानकारी न होना है। इसके लिए आवश्यक तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। कृषकों को लाख उत्पादन के उन्नत तकनीक, लाख कीट जीवन चक्र, फसल चक्र, लाख पोषक वृक्षों की जानकारी दी गई। संस्थान के संचालक प्रदीप वासुदेवा, डीएफओ ऋषि मिश्रा के निर्देशन में बलराम लोधी, भारत सिंह आर्यो, जशनदीय सिह ठाकुर आदि द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

18/05/2025 | jabalpur | Page : 6
Source : https://epaper.patrika.com/

पीपुल्स समाचार

विशेषज्ञों ने कृषकों को बताई लाख की महत्ता

राष्ट्रीय लाख कीट दिवस पर कार्यशाला

पीसं, जबलपुर। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्-राष्ट्रीय कृषि उच्चतर प्रसंस्करण संस्थान, रांची के निर्देशन में लाभकारी कीट सप्ताह एवं राष्ट्रीय लाख कीट दिवस के अवसर पर राज्य वन अनुसंधान संस्थान, (एसएफआरआई) जबलपुर एवं जबलपुर वन मंडल के द्वारा संयुक्त तत्वावधान में वन परिक्षेत्र सिहोरा के अंतर्गत ग्राम सिलुआ में शुक्रवार को एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में अतिथि के रूप में दिलीप पटेल, जनपद पंचायत उपाध्यक्ष सिहोरा, शिवप्रसाद बिरहा, सरपंच सिलुआ ग्राम उपस्थित थे। कार्यशाला में अतिथियों के साथ वन विभाग से वनरक्षक विनय सिंह राजपूत (वनरक्षक) भी मौजूद रहे।

कार्यशाला में परियोजना अन्वेषक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार (वैज्ञानिक) द्वारा कृषकों को लाख उत्पादन के उन्नत तकनीक, लाख कीट जीवन चक्र, फसल चक्र, लाख पोषक वृक्षों की जानकारी, कीट संचारण, लाख फसल प्रबंधन, फसल कटाई, लाख प्रसंस्करण से सम्बंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन संस्थान के संचालक प्रदीप वासुदेवा एवं वनमंडलाधिकारी जबलपुर, ऋषि कुमार मिश्रा के निर्देशन में किया गया था। कार्यक्रम को सफल बनाने में बलराम लोधी, भारत सिंह आर्मो एवं जशनदीप सिंह ठाकुर का विशेष सहयोग रहा।